हिन्दु राष्ट्र चिन्तन

दत्तोपन्त ठेंगरी

॥ ॐ ॥

संघ विषयक चर्चा बहुत दिनों से चल रही है। मैं यहाँ इसलिए उपस्थित नहीं हुँ कि संघ पर जो आरोप लगाये जाते हैं। उनका उत्तर देना है। इसकी मैं आवश्यकता नहीं समझता; क्योंकि संघ पर आ ेप लगानेवाले दो तरह के लोग हैं। एक तो हैं जो आदर्शवादी हैं। स्वयं उनका कोई ध्येय है। और वे समझते हैं कि उनका ध्येय और संघ का ध्येय परस्पर विरोधी है इसलिए वे विरोध करते हैं। वे हमारे विरोधी जरूर हैं लेकिन केवल व्यक्ति-वादी नहीं। केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के लिए काम नहीं कर रहें। हमारा उनका आदर्श भिन्न होगा, विरोधी होगा। लेकिन वे भी आदर्शवादी हैं, इसके कारण हम उनकी इज्जत करते हैं, वे हमारी इज्जत करते हैं। ऐसे लोग जब कोई लांछन लगाते हैं तो उसका विचार हम गंभीरता से करते हैं। उनके साथ हमारी बातचीत भी हुआ करती है।

लेकिन पिछले दिनों में जो कुछ भी टीका टिप्पणी संघ पर हुई है, वह ऐसे लोगों के द्वारा नहीं हुई, वह तो केवल **Power Seekers** के द्वारा हुई है यानि जिनका कोई ध्येय नहीं, आदर्श नहीं, जो व्यक्तिवादी हैं, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा लेकर काम कर रहे हैं, सत्ता प्राप्त करना यही जिनका ध्येय है, ऐसे ही लोगों के द्वारा हो रही है, और इसके कारण उनके हमारे कोई सैद्धांतिक मतभेद नहीं। सैद्धांतिक मतभेद होने के लिए दोनों तरफ सिद्धांत होने की आवश्यकता है।

उनका कोई सिद्धांत नहीं। इसलिए उनके हमारे कोई सैद्धांतिक मतभेद नहीं। और हम यह जानते हैं कि जिनका, **Power** यही ध्येय है, भगवान है (उन्हें) संघ का विरोध करना ही है किसी भी हालत में। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है इसलिए विरोध होता है ऐसा नहीं, वह राष्ट्र विरोधी

स्वयंसेवक संघ रहा (होता), तो भी विरोध होगा। सिद्धांत के कारण विरोध नहीं। विरोध इसी कारण है कि वे Power चाहते हैं और जो Power चाहता है वह कभी भी दूसरे शक्ति केन्द्र को बरदास्त नहीं कर सकता। Power का अपना एक गुण है—Self expantion, Self perpetuation याने अपने हाथ में आनेवाले अधिकार का दायरा बढ़ता रहे। अधिकाधिक विषय अपने दायरे में आ जाएँ। और एकबार हाथ में सत्ता आई तो अखंड मेरे ही हाथ में सत्ता रहे। यह Power का गुण है। इसके कारण जो सत्तावादी हैं, वे किसी भी अन्य शक्ति केन्द्र को, वह राजनैतिक रहे, गैर राजनैतिक रहे, अच्छा रहे—बुरा रहे, बरदास्त नहीं कर सकता; क्योंकि वह समझता है कि इसके कारण हमारे लिए खतरा पैदा हो सकता है। जैसे प्राचीन काल में ऋषि तपश्चर्या करते थे, और तपश्चर्या वह ब्रह्म प्राप्ति के लिए ही करते थे, लेकिन इन्द्र महाराज का सिंहासन हिलने लगता था। वे समझते थे कि इसकी तपश्चर्या बढ़ जायगी, यह लोकप्रिय हो जायगा तो मेरा क्या होगा? तो फिर भय दिखाकर या प्रलोभन देकर तपश्चर्या को भंग करने की वे चेष्टा करते थे। यही बात आज संघ के बारे में हो रही है।

संघ, शक्ति केन्द्र है। अगर संघ शक्तिमान न होता तो कोई इसका विरोध न करता। हिन्दुत्व के कारण इसका विरोध हो रहा है ऐसी भी बात नहीं; क्योंकि हिन्दुत्व की भाषा अधिक Extrem पर जाकर बोलने वाले लोग हिन्दुस्थान में है। उनका कोई विरोध नहीं करता। उनपर कभी Ban वगैरह नहीं लगाया जाता। कारण यह है कि वे जानते हैं कि कितनी भी Extremist भाषा क्यों न बोले इनके किये से बनता तो कुछ नहीं। इनके पास ताकद तो कुछ नहीं। अंग्रेजी में कहा गया है कि "No body kicks pet dog." तो इसलिए हम यदि दुर्बल होते तो ये हमारा विरोध नहीं करते। तो संघ इतना दुर्बल नहीं कि इसकी उपेक्षा हो सके। किन्तु हम इतने प्रबल भी नहीं कि जिसके कारण हम पर हाथ लगाने का

साहस भी न हो। दोनों के बीच की अवस्था है इसलिए सारी गड़बड़ हो रही है। और इसीलिए इसमें से यह समझना कि ये सत्तावादी लोग बड़े सिद्धांत के आधार पर संघ का विरोध कर रहें हैं यह गलती होगी। किसी भी हालत में इनको संघ का विरोध करना है—क्योंकि वे किसी भी शक्ति केन्द्र को बरदास्त नहीं करते। यहाँ तक कि स्वयं अपनी पार्टी को भी ये लोग इतना बलवान नहीं होने देंगे कि चाहे तो पार्टी उन्हें उछाल सके, फेंक सके। कारण यह है कि ऐसे लोग हाथी पर, यानी अपनी पार्टी के हाथी पर तो वे चढ़ना चाहते हैं; लेकिन हाथी को थोड़ा सा लंगड़ा बना देते हैं, ताकि वह उनको उछाल कर फेंक नहीं सके। तो ऐसे लोग संघ का विरोध करते हैं इसमें आश्चर्य नहीं। और इसलिए पिछले दिनों जो संघ का विरोध हुआ है वह केवल व्यक्तिवादी, सत्तावादी लोगों द्वारा हुआ है, ध्येयवादी लोगों के द्वारा नहीं हुआ। और इसलिए ऐसे लोगों की टीका टिप्पणी की फीक्र करना हमारे लिए अपमानजनक ही है ऐसा हम समझते हैं।

तो आरोपों का उत्तर देने के लिए मैं खड़ा नहीं हूँ। यही अवसर लेकर, जो हमारे सिद्धांत हैं उन्हें हम स्वयं समझें, लोगों को समझायें और उनके विषय में एक **Public debate**—सार्वजनिक चर्चा शुरू कर दें। यह राष्ट्र के हित की बात है। इस दृष्टि से यह जो चर्चा का विषय है—राष्ट्र—इसके विषय में कुछ बातें मैं रखना चाहता हूँ।

राष्ट्र यह एक-शब्द है अंग्रेजी में **Nation**, ऐसा उसका भाषांतर हुआ है। और अंग्रेजी भाषांतर करते हुए **Nation** के जो नियम हैं वे राष्ट्र पर लागू होने चाहिए ऐसा आग्रह किया जाता है। पहले तो यह अन्वेषण का विषय है—इसके विषय में मैं अपना निष्कर्ष नहीं देना चाहता, लेकिन यह एक अन्वेषण का विषय है कि पश्चिम में लोगों की '**Nation**' यह संस्था और हमारी 'राष्ट्रकल्पना' दोनों क्या एक ही है? क्यों कि हमारा राष्ट्र तो अतिप्राचीन है, सनातन है। इतिहास ने जब आँखें खोली तो हमको राष्ट्र-स्वरूप में ही देखा। उनकी 'Nation Concept' बहुत नयी है। डॉ०

अंबेडकर ने अन्वेषण करते हुए कहा कि, पहले योरोप में 'Nationalism' नहीं 'Tribalism' था। Tribalism का मतलब है टोलियाँ। कृषि का अन्वेषण नहीं हुआ था और इसके कारण पशु-पालन और शिकार ये दो ही धंधे थे। तो अपने पशुओं को पालन करने के लिए उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर चारे की तलाश में जाना पड़ता था। शिकार के लिए भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ता था। इसके कारण अनवरत भ्रमण करना पड़ता था। तो ये घुमंत जातियाँ योरोप में भ्रमण करती थी—इसके कारण किसी भी एक भूमि के बारे में आत्मीयता होने का प्रश्न नहीं था। बाद में जब कृषि की खोज हो गई—और कृषि के लिए एक भूमि पर रहना आवश्यक हुआ तब Tribalism यानि गोत्रीयत्व—इसके साथ-साथ भूमि के विषय में प्रेम—यानि 'Territorialism' यानि प्रादेशिकत्व, दोनों का संयोग हुआ—Synichronisaton हुआ। और 'Tribalisms Territorialism' 'गोत्रीयत्व' और 'प्रादेशिकत्व' इनके संयोग से Nationalism' निर्माण हुआ। ऐसी खोज करते हुए डॉ० अंबेड कर ने कहा। यह प्रक्रिया उनका कहना है कि लगभग ३००-४०० साल में ही हुई। २५०-३०० वर्ष पहले इंगलैण्ड के राजा को King of England नहीं कहा जाता था। 'King of the English' कहा जाता था 'King of France' नही था 'King of the French' था 'King of England' 'King of France' यह जो Territorial संज्ञा है, यह २५०-३०० साल की बात है। जिनसे थोड़ा बहुत 'Nationalism' का प्रारम्भ है—योरोप में, जिसको Trisco Germanic invasions कहते है उसके पश्चात् हुआ और विशेष रूप से यह भावना पोप की अधिसत्ता के खिलाफ अलग-अलग राजाओं में जो प्रतिक्रियाएँ निर्माण हुई इसके फलस्वरूप है। और विभिन्न साम्राज्यवादों के खिलाफ अलग-अलग लोगों में जो प्रतिक्रिया थी उसके फलस्वरूप ज्यादा से ज्यादा ३००-३५० साल में यह Nationalism की भावना पैदा हुई। अब यह Nationalism की भावना पूरी है ऐसा भी मान लिया तो मनोविज्ञान की दृष्टि से

यह सोचने की बात है, और इस पर अन्वेषण होना चाहिए कि गुणात्मक दृष्टि से, सनातन काल से चलता आया हुआ जो राष्ट्र है, उस राष्ट्र के लोगों के मन में अपनी भूमि के विषय में जो एकात्मता का भाव होगा, राष्ट्र के विषय में जो एकात्मता का भाव होगा, उसकी उत्कटता 'intensity'; और केवल ३००-४०० साल में जिन्होंने एकात्मता का अनुभव किया उनकी एकात्मता की Intensity, उत्कटता दोनों उत्कटताओं में कुछ अन्तर है क्या? यह एक खोज करने का विषय है। होना चाहिए, ऐसा मैं समझता हूँ। जादा देर तक भूमि और जन के साथ एकात्मता का भाव और थोड़े दिन तक एकात्मकता का भाव उनमें उत्कटता की दृष्टि से Intensity की दृष्टि से बहुत अन्तर होगा ऐसा मैं मानता हूँ। किन्तु यह एक अन्वेषण का विषय है।

दूसरी बात हिन्दुस्थान में जो लोग राष्ट्र की बात करते हैं वे राष्ट्र और राज्य दोनों को एक ही समझते हैं। वास्तव में राष्ट्र और राज्य दोनों क्या एक ही है? अलग-अलग बात है। इतिहास में हम देखते हैं कि अलग-अलग बात है। आज भी हम देखते हैं कि अलग-अलग बातें हैं, राष्ट्र अलग बात है और राज्य अलग बात है। यह ठीक है कि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् 'Nation & State', 'राष्ट्र—राज्य' कल्पना का उदय हुआ। एक राष्ट्र एक राज्य में रहना चाहिए यह बात आई। बात अच्छी है। हम उसका स्वागत करते हैं। किन्तु दो चीज, आज के राष्ट्र और राज्य हमेशा सम व्याप्त रहेंगे ऐसा नहीं दिखाई देता। एक राष्ट्र—एक से अधिक राज्य एक राज्य, एक से अधिक राष्ट्र—दोनों तरह के उदाहरण आज की तारीख में भी हम देख सकते हैं। 'चेकोस्लाविया' राज्य एक है, राष्ट्र दो हैं। युगोस्लाविया राज्य एक है राष्ट्र तीन है plus कुछ Tribes। सोवियत रूस में एक सौ से अधिक राष्ट्र और राष्ट्रक एक राज्य के अन्तर्गत हैं। फिर राष्ट्र एक, राज्य अनेक, जर्मनी राष्ट्र एक है राज्य दो हैं। कोरिया राष्ट्र एक, राज्य दो हैं। आयरलैण्ड राष्ट्र एक है राज्य दो हैं। कई उदाहरण हैं। तो इस तरह से दोनो समव्याप्त नहीं है। इसके अलावा दोनों

के Functions भी एक नहीं है। यह ठीक है कि राष्ट्र और राज्य दोनो के कुछ Common ingradients हैं। दोनो के लिए भूमि की आवश्यकता है, दोनो के लिए जन की यानि लोगों की आवश्यकता है। और इसके कारण भूमि और जन, जहाँ एक राष्ट्र—एक राज्य, यह मामला होता है, वहाँ भूमि और जन दोनो समान दिखाई देते हैं। लेकिन कार्य दोनो के अलग-अलग हैं। राज्य का जो कार्य है उसके लिए आवश्यक है कि भूमि और जन के साथ-साथ सरकार भी होनी चाहिए और सरकार का सार्वभौमत्व सर्वप्रभुत्व भी होना चाहिए। सरकार और सार्वभौमत्व के बिना राज्य नहीं हो सकता। राष्ट्र यह Government और Sovereignity के बिना हो सकता है। और हमारे देश में तो यह इतिहास ही है कि कितने ही शताब्दीयों तक इसके विस्तृत भू-भाग पर—हमारे देश के—हमारी सरकार नहीं थी—सार्वभौमत्व नहीं था तो भी हमारा राष्ट्र जीवित रहा। तो Government और Sovereignity दो बातें अपरिहार्य हैं राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए अपरिहार्य नहीं। तो राष्ट्र यह एक लोगों की जीवन पद्धति का, लोगों की संस्कृति का नाम है। और राष्ट्र शरीर मान लिया, तो राज्य उसका 'वस्त्र-मात्र' है। शरीर और वस्त्र इसका जो संबंध है वही राष्ट्र और राज्य का संबंध है। इसके कारण राष्ट्र और राज्य दोनों एक है यह समझना यह भूल होगी।

और भी एक बात है। 'राष्ट्र-कल्पना' के कारण—तदनंतर जब लोगों के मन में जो एकात्मता का भाव निर्माण होता है वह, और राज्य एक होने के कारण जो एकात्मता निर्माण होती है वह, दोनो क्या एक ही प्रकार की है? यह भी एक देखने की बात है। ऐसा दिखता है कि राज्य एक होने के कारण उतनी एकात्मता निर्माण नहीं हो सकती है—जितनी राष्ट्र एक होने के कारण होती है; क्योंकि राष्ट्र यह एक सजीव ऐसी बात है। राज्य यह एक निर्जीव बात है। राज्य एक मशीन है। राष्ट्र एक Living Organism है। इसलिए राष्ट्र के द्वारा निर्माण होने वाली एकात्मता राज्य के द्वारा निर्माण नहीं हो सकती ऐसा दिखाई देता है। उदाहरण के रूप में अभी

जो मैंने कहा 'चेकोस्लाविया' में एक राज्य है दो राष्ट्र हैं, इतने साल से एक राज्य रहने के बावजूद 'ल्लाव' लोगों की माँग है कि हमारी स्वतंत्र अस्मिता है हमे अलग राज्य चाहिए। मार्शल टीटो के बाद युगोस्लाविया में तीनों राष्ट्र अलग हो जायेंगे—तीन राज्य होंगे यह स्पष्ट दिखाई देता है। रशिया में इतने साल से—५० साल से अधिक समय हो गया, ६० साल होने आये तो भी यहाँ एकात्मता का निर्माण नहीं हुआ। अलग-अलग स्वतंत्र अस्मिता, अलग-अलग राष्ट्र की, दिखाई देती हैं। जो वैभवशाली राष्ट्र होता है उसके हम अंग हैं ऐसा बताना यह मनुष्य का स्वभाव है। जैसे संपन्न परिवार के साथ हर एक आदमी अपना रिश्ता जोड़ना चाहता है, उसमें गौरव का अनुभव करता है। जैसे, जब ब्रिटीश साम्राज्य था उस समय, सबको हम ब्रिटीश हैं ऐसा कहने में एक गौरव का अनुभव होता था; लेकिन जैसे संपन्न परिवार गरीब हो जाता है—उसके ऊपर कर्ज चढ़ने लगता है उसकी बेइज्जती होने लगती है, तो पहले उसके साथ रिश्ता जोड़ने में गौरव का अनुभव करने वाले भी कहने लगते हैं कि, उसका हमारा कोई रिश्ता नहीं। ऐसी बात अंग्रेजों के साथ दिखाई देती थी। ब्रिटिशों का साम्राज्य था तबतक स्कॉटलैण्ड के लोग, नार्थ आयरलैण्ड के लोग, वेल्स ये सारे लोग अपने को ब्रिटिश कहते थे। और ऐसा आभास हुआ कि एकात्मता राज्य के कारण निर्माण हुई। किन्तु जैसे ही साम्राज्य टूट गया, गरीबी के दिन आ गये, दुर्दशा हो गई, वैसे ही स्कॉटलैण्ड में स्वतंत्र अस्मिता जाग्रत हुई, वेल्स में स्वतंत्र अस्मिता जाग्रत हुई और स्वतंत्र नहीं तो कम-से-कम स्वायत्त राज्य हमारे अलग होने चाहिए, इस तरह की मांग, हमारी स्वतंत्र पार्लियामेण्ट होनी चाहिए इस तरह की मांग यह दोनो तरफ से होने लगी। इसलिए राज्य के कारण वह एकात्मता कहाँ तक निर्माण होती है यह संदेह मन में होता है। अमेरिका में ऐसा कहते हैं सारा एक राष्ट्र है—सब लोग इसमें गौरव का अनुभव करते हैं कि हम अमेरिकन हैं लेकिन यदि कोई संकट हो जायगा तो वहाँ जो अलग-अलग Ethnic groups हैं वे कहाँ तक उस राष्ट्र के साथ अपना संबंध दिखाएँगे, निष्ठा दिखाएँगे यह आज नहीं कहा

जा सकता। पिछले प्रथम महायुद्ध के समय वहाँ के जर्मन लोगों ने तो सीधे जर्मन स्टेट की मांग की थी, तो इसलिए जैसे ही अमेरिका प्रथम महायुद्ध में कूद पड़ा, वैसे ही सैकड़ों जर्मन लोगों को arrest करना पड़ा। आज भी पूरी तरह से एकात्मकता हुई नहीं। कितने ही दशकों से Canada यह एक राज्य है, किन्तु Canada में एकात्मता का भाव निर्माण हुआ ऐसा कोई नहीं कह सकता। सेनापति देगाल का जब वहां दौरा हुआ था—उस समय आपको स्मरण होगा कि वहां के French population ने उनको मानपत्र दिया। और इस मानपत्र के समय स्पष्ट रूप से कहा कि हमारी स्वतंत्र अस्मिता है, Separate identity है और इसलिए स्वतंत्र नहीं तो हमारा अलग से स्वायत्त राज्य होना चाहिए; हमारा अलग से झंडा होना चाहिए और सेनापति देगाल के द्वारा इस मांग को आशीर्वाद देने के कारण International Emberassment पैदा हुई थी उनको दौरा अधूरा छोड़कर आना पड़ा था यह ताजा इतिहास है, आपको ख्याल होगा। तो राज्य के कारण वही एकात्मता निर्माण नहीं हो सकती जो राष्ट्र के कारण होती है। इसका प्रमुख कारण है कि राष्ट्र एक living organism है—राज्य एक मशीनरी है और इसीलिए राष्ट्र और राज्य यह दो अलग-अलग बाते हैं यह समझना चाहिए। और यह न समझते हुए जो नियम राज्य के लिए लागू हैं वही राष्ट्र के लिए लागू होंगे, ऐसा कहना—पूरी जानकारी नहीं है इसका परिचय देना होगा।

आज हमारे महाँ राष्ट्र के विषय में जो बातचीत कर रहे हैं वे बड़ी शास्त्रीय वात नहीं कर रहे हैं। गलत ढंग से बात पेश कर रहे हैं। कह रहे हैं कि यहाँ संघर्ष Nationalism versus Communalism का है। राष्ट्रीयता विरूद्ध साम्प्रदायिकता। यह साम्प्रदायिकता क्या चीज है? ऐसा कहते हैं कि Religion के कारण साम्प्रदायिकता आती है। हिन्दू Religion वाले मुसलमान Religion वालों को तकलीफ देते हैं। मैं इस बात में नहीं जाऊँगा कि कौन किसको तकलीफ देता है। यह छोटी बात है। जमशेदपुर वालों को इसका अच्छा पता है। इस कारण इस विषय मैं जाने की मेरी

इच्छा नहीं। लेकिन हम यह सोचें कि हिन्दू Religion के कारण क्या कभी संघर्ष पैदा हो सकता है ?

सबसे पहले तो हम बात देखें कि हिंदू नाम का कोई Religion है क्या ? कोई हमें यह बताए कि यह हिन्दू Religion है। इस Religion का यह मसीहा है ? इस Religion का यह एक ग्रन्थ है, यह देवता है। कोई बता सकता है ? हमारे यहाँ वेद माननेवाले हैं, न माननेवाले हैं। हमारे दर्शनों में से तीन दर्शन नास्तिक हैं। हमारे यहाँ स्वर्ग को माननेवाले हैं, न माननेवाले हैं। शून्य को माननेवाले हैं। और Materialism भी हमारे यहाँ है। नास्तिक Philosophy जो हमारे यहाँ निर्माण हुई शुक्राचार्य से लेकर चार्वाक तक जो सम्प्रदाय चला वह विशुद्ध भौतिकतावादी रहा। यहाँ सभी पंथ हैं, सभी संप्रदाय हैं। हिंदुओं के अलग-अलग Religions हैं, परन्तु हिन्दू Religion नाम का कोई पदार्थ नहीं। फिर भी हिन्दू यह जानता है कि Religion क्या है ? यह मनुष्य और जो अन्त में एक सत्य है उसके बीच में जो रिश्ता है उसको Religion कहा गया है। Relation ship between man and his maker. फिर उसको आप कोई भी नाम दीजिए—एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति। तत्व एक ही है, अलग-अलग लोग अलग-अलग नाम से पुकारते हैं। कोई उसको विष्णु कहे, कोई शिव कहे, कोई अल्लाह कहे, कोई Father in Heaven कहे—Marxist होगा उसको Matter कहेगा, नाम आप उसको कुछ भी दीजिए, अन्तिम तत्त्व एक ही है। उसी को अलग अलग नाम पुकारा जाता है। इसलिए अपने यहाँ कहा गया कि अन्तिम तत्त्व एक है गन्तव्य स्थान एक है। वहाँ तक पहुंचने का हर एक का रास्ता अलग-अलग ही होना चाहिए। क्यों ? क्यों कि हरएक का शारीरिक स्तर, मानसिक स्तर, बौद्धिक स्तर, आत्मिक स्तर अलग-अलग है। इसके कारण सबके लिए एक रास्ता नहीं हो सकता। सबके Mental back grounds अलग-अलग हैं। सबके Starting points अलग-अलग हैं। और इसके कारण सबके लिए रास्ता एक riligion हो नहीं सकता। मान

लीजिए कि चार लोग चार स्थान पर खड़े हैं। Bombay, Calcutta, Madras और Delhi सब को नागपुर पहुंचना है। नागपुर लगभग बीच में है, हिन्दुस्थान के केन्द्र में। तो सबके लिए क्या आप एक दिशा बता सकते हैं ? मान लीजिए कि मद्रास के आदमी को ध्यान में रखकर आपने कहा कि सब को एक ही दिशा लेनी चाहिए, उत्तर की ओर जाने की। तो हो सकता है कि मद्रास वाला नागपूर पहुंच जायगा। किन्तु दिल्ली वाला किधर पहुंचेगा ? नागपूर नहीं पहुंचेगा। तो सबके लिए एक दिशा नहीं हो सकती, क्योंकि हर एक का Starting point अलग-अलग है। तो हमारे यहाँ माना गया कि हरेक का रास्ता अलग हो सकता है, होना चाहिए। उसकी प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक स्तर और Starting point, Mental background, सारा ध्यान में रखते हुए हर एक का अलग-अलग रास्ता होना चाहिए। और इसीलिए शायद ३३ कोटि, देवता हिन्दुओ के हैं ऐसा बताया गया। उस समय हिन्दुस्थान की जनसंख्या ३३ करोड़ होगी। हर एक का अलग-अलग देवता है ऐसा माना गया। और जब भगवान ने यह कहा गीता में—

ये येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता:
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधि पूर्वकम् ॥९॥२३। गीता

जो अन्य देवताओं के भी भक्त हैं वे मेरा ही पूजन कर रहे हैं। तो उन्होंने निश्चित रूप से उनके समय बाकी जितने भी देवता अस्तित्व में होंगे उनकी भी कल्पना की। वैसे ही उनके पश्चात् जितने देवता निर्माण होनेवाले होंगे दुनिया में सबकी कल्पना उन्होंने की। He aniticipated all other dieties. उसको आप अल्लाह कहिए जहोवा कहिए, कुछ भी कहिए कितने नाम हैं। तो सभी देवताओं की उन्होंने कल्पना की है, उनको anticipate किया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है ये ऽ प्यन्यदेवता—ऐसा कहा। और इसीलिए हमारे यहाँ पर प्रार्थना एक है—वह हमारे इस दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करती है। वह त्रैलोक्यनाथ हरि मेरे वांछित फल मुझे दे। कामना पूरी करे। और उसत्रैलोक्यनाथ हरि का वर्णन क्या किया ?

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेनि नैय्यायिका
अर्हन इत्यथ जैनशासनरताः कर्मेति वैशेषिकाः
सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरि ॥

शैव जिसको शैव कहते हैं, वेदान्ती जिसको ब्रह्म कहते हैं वैशेषिक जिसको कर्म कहते हैं—न्यायिक जिसको कर्त्ता कहते हैं, बौद्ध जिसको बुद्ध कहते हैं, जैन जिसको अर्हत कहते हैं वह हरि मेरी कामना पूरी करे। यह स्पष्ट है कि यदि आज वह निर्माण होता तो शायद वह कहते कि मुसलमान जिसको अल्लाह कहते हैं, ईसाई जिसको जीसस कहते हैं, यहुदी जिसको यहोवा कहते हैं वह मेरी कामना पूरी करे। चीज एक ही है। रास्ते अलग-अलग हैं यही इसका अर्थ है। इस दृष्टि से Religion को यहां personal affair माना गया है। As strictly personal as one's tooth brush हर एक का tooth brush जैसे personal ही होता है। ऐसा नहीं होता कि tooth brush अच्छा है तो पूरे जन को चलो एक tooth brush दे दिया। हर एक का tooth brush अलग-अलग होता है। वैसे ही हर एक का religion अलग-अलग होना चाहिए ऐसी अपने यहां कल्पना है इसके कारण हिन्दू यह religion के लिए झगड़ा करेगा यह हो ही नहीं सकता। हिन्दू religion नाम की कोई वस्तु नहीं।

उदाहरण के लिए किराना माल की दूकान लें। शायद इधर परचून की दूकान कहते हैं। अब आप उस दूकान में जाइये। १०/- की नोट दूकानदार को दीजिए। और कहिए कि किराना नाम की वस्तु मुझे १०/- की दीजिए। या परचून नाम की वस्तु १०/- की दीजिए। कोई दूकानदार आपको दे नहीं सकता; क्योंकि वह दुकान तो है परचून या किराने की। लेकिन परचून या किराना नाम की कोई वस्तु नहीं है। तो इस संज्ञा के अंदर और पचास किस्म की चीजें आ सकती हैं। परन्तु किराना नाम की वस्तु नहीं। उसी तरह से हिंदू Religion नाम की वस्तु नहीं है। हां, हिन्दू

के अन्तर्गत कई religion आते हैं, सब religions हिन्दू के अन्तर्गत आ सकते हैं। सभी उपासना पद्धतियां हमारे अन्दर आ सकती हैं। किन्तु हिन्दू नाम का कोई religion नहीं। इसके कारण यहां झगड़ा होने की कोई संभावना नहीं। और यही कारण है कि अलग-अलग religions के लोगों का कहीं स्वागत हुआ और कहीं स्वागत नहीं हुआ। सबसे पहले जीसस की मृत्यु के पश्चात् ५५वें साल में St. Thomas यहां आये। उपासनापद्धति के साथ आये। ईसाइयत का पालन करते हुए छोटी सी संख्या में यहां रहे, केरल में। किसी ने उनके ऊपर आक्रमण नहीं किया। फारसी यहां आये, अपनी पूजा पद्धति को सम्हाल कर रहे, किसी ने आक्रमण नहीं किया। और इजरायल ने जो ग्रन्थ लिखा है उसमें कहा है कि हर देश में हमारे ऊपर आक्रमण हुआ, लेकिन हिन्दुस्थान अकेला है जिन्होंने हमारे साइनागास पर, हमारे मंदिर पर उन्होंने आक्रमण नहीं किया अकेला देश है ऐसा उन्होंने लिखा। यहां पूजापद्धति के लिए कभी झगड़ा नहीं हुआ।

दूसरी बात Religion के कारण दुनियां में भी क्या कभी झगड़े हुए? दुनियां में भी कभी झगड़े नहीं हुए। Religion का नाम लेकर, अपना स्वार्थ बढ़ाने की जो कोशिश करते हैं उनके कारण झगड़े नहीं हुए। और यह बहाना लेने वाले दो तरह के लोग हैं। एक राजनैतिक स्वार्थ को लेकर चलते हैं, एक व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर चलते हैं—व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर वे चलते हैं—हर एक Religion में जब कोई व्यवस्था का निर्माण होता है——उसको Institutionalise किया जाता है। तो उस समय उसके कुछ न कुछ ठेकेदार निर्माण हो जाते हैं। जिसको उपाध्याय कहते हैं, पुरोहित कहते हैं, ऐसे निर्माण हो जाते हैं। वे यदि Vested Interest अपना बना लेते हैं, निहित स्वार्थ बना लेते हैं, तो उस निहित स्वार्थ के कारण झगड़े खड़े होते हैं। हिन्दुस्थान में आक्रमक आये—जितने भी आक्रमक आये—सब लोगों के सामने एक समस्या थी। जो आक्रमक आये वे अपने को आक्रमक नहीं कहते थे; वे बड़े साधु-संत थे, उनको

अल्लाह का साक्षात्कार हुआ था, अल्लाह का ही संदेश यहां पहुँचाने के लिए ही उन्होंने तलवार अपनी निकाली थी; ऐसा नहीं। मोहम्मद गजनी यहां का सोना और हीरे लूटने यहां आया था वह कोई साक्षात्कारी पुरुष नहीं था। तो जितने लोग आये चाहे तूर्क हो, मुगल हों, पठान हों, अरब हों चाहे जो आये वे यहां की सम्पत्ती के लालच से आये, यहां शासन चलाने के लालच से आये। लेकिन दूर से आक्रमणकारी जो आते हैं उनके सामने समस्या रहती है—अंग्रेजो के सामने भी रही कि इतने लम्बे-चौड़े देश पर थोड़ी संख्या में हम कैसे शासन चला सकते हैं ? अपने देश से लायेंगे तो भी कितने लोगों को लायेंगे ? तो इतना यह विशाल देश है कि जब तक हम यहां अपनी Lobby, अपने लिए अनुकूल इस तरह की एक Lobby तैयार नहीं करते तब तक यहां शासन चलाना संभव नहीं और Lobby चलाने का एक अच्छा रास्ता कि अपना Religion यहां फैलाना। याने अपने Religion के जो लोग हो जायेंगे वो out cast हो जायेंगे, बहिष्कृत हो जायेंगे और अपने लिए उतनी ही अनुकूल Lobby अपनी बन सकती है। इस दृष्टि से यहां धर्मान्तरण का प्रयोग हुआ। किन्तु जो धर्मान्तर कराने वाले राज्यकर्त्ता मुस्लिम थे वो बड़े Devoted मुस्लिम थे ऐसा नही दिखाई देता। अंग्रेजों ने यही किया, उन्होंने अपनी इसाईयत यहां फैलाई। आज भी Eastern-Region में चाहे मेघालय हो, अरुणांचल हो, असम हो, नागालैंड हो इसाईयत का जो प्रचार चल रहा है वो कोई जीसस का साक्षात्कार कराने के लिए नहीं चल रहा हैं बल्कि जो Political Interest है उसको बढाने के लिए इसाईयत का प्रचार चल रहा है। तो ये जीसस के कारण झगड़े नहीं हैं Estern Region में, Political Interest के कारण हैं। यहां तक कि जिस पाकिस्तान की निर्मिति हुई है, आज उस पाकिस्तान के निर्माता बँ० जिन्ना ये न तो मज्जिद में जाते थे, न कुराण पढ़ते थे। नास्तिक पुरुष थे। प्रचंड रूप से नास्तिक पुरुष थे। और जब उनको यह पता चला कि इस्लाम का नाम लेने से मेरी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा पूर्ण हो सकती है, उस समय उन्होंने इस्लाम का नाम लिया वरना वे इस्लाम के बारे में कुछ भी

आस्था रखने वाले नहीं थे यह बात सब लोग जानते हैं। तो राजनैतिक स्वार्थ के लिए चाहे christianity हो चाहे इस्लाम हो इसका उपयोग लोगों ने किया। वास्तव में Religion के कारण ये झगड़े खड़े हुए ऐसा कोई नहीं कह सकता। Religion के नाम का उपयोग यह राजनैतिक स्वार्थ वालों ने किया। वैसे ही जिनका Vested Interest निर्माण हुआ था यानि Religion Institutionalise होने के बाद जो व्यवस्था आयी उसमें जिनको प्रमुखता प्राप्त हुई थी यानि Priesthood, उपाध्याय वर्ग चाहे उसको मुल्ला कहा जाय विशप कहा जाय पादरी कहा जाय—इन लोगों ने अपने निहित स्वार्थ के लिए भी झगड़े निर्माण किए यह दुनियां का इतिहास बताता है। आज हमें यहां कहा जाता है कि हिन्दू-मुस्लिम Riots होते हैं। ठीक है यहां हिन्दू भी हैं मुसलमान भी हैं। लेकिन जहां १००% मुसलमान देश है वहा Riots क्यों हुए ?

अफगानिस्तान में प्रथम महायुद्ध के पश्चात, जैसे सभी मुस्लिम देशों में वैसे अफगानिस्तान में भी राष्ट्रीयता का भाव जागा। और उनको लगा कि मोहम्मद से पहले भी अपनी अस्मिता एक अलग से थी। और इस दृष्टि से यह नया भाव निर्माण हुआ कि हम आर्यन हैं। अपनी कुछ आर्यन संस्कृति है। राष्ट्रीयता का भाव जैसे निमांण हुआ वैसे ये Religion के ठेकेदार नाराज हो गये और उस नवजागृति का नेतृत्व करनेवाले अमीर अमानुल्ला को उन्होंने पदच्युत किया। भागने के लिए बाध्य किया यह इतिहास हम जानते हैं। ईराण में भी जब नवराष्ट्रीयता का जागरण हुआ, तो उस समय Pre Islamic Heroes जो उनके थे सोहराब है, रुस्तम है, जमशेद है, बेहराम है, ये जो उनके-इस्लाम से पूर्व, किन्तु उनके राष्ट्र पुरुष थे, उवकी स्मृति का जागरण हुआ। और इस बात का विरोध वहां भी Religion के ठेकेदारों ने किया। यह इतिहास बताता है। इजिप्त में यही प्रक्रिया हुई। टर्की में तो और भी clasical उदाहरण हमें दिखाई देता है। मुस्तफा कमाल पाशा जब आये तो उन्होंने कहा कि हम कुराण को मानते हैं, मस्जिद को मानते हैं, मोहम्मद साहब को मानते हैं, अल्लाह को मानते हैं, लेकिन

हमारी राष्ट्रीयता की मांग है कि **Religion** के नाम पर अरेबिक संस्कृतिका आक्रमण तूर्की संस्कृति पर बरदास्त नहीं कर सकते। इस दृष्टि से जितना आक्रमण 'अरेबिक' संस्कृति का तुर्की पर हुआ था वह दूर करने के तरह-तरह के उपाय उन्होंने किये। उसमें से एक उपाय यह था कि कुराण का तुर्की भाषा में भाषांतर। कुरान अरेबिक **Arabic** में है। उन्होंने कहा कि हम अपनी राष्ट्र भाषा में कुराण का भाषांतर करेंगे। तो ठेकेदार लोगों ने विरोध में आवाज उठाई कहा कि यह पाखंड है। कमाल पाशा ने कहा कि यह पाखंड कैसे हो सकता है? भाई अल्लाह की प्रार्थना ही करनी है न? तो अल्लाह ऐसा का **Ignorant** है? अज्ञानी है? अनपढ़ है? कि उसको Arabic तो ख्याल आती है, परन्तु जो तुर्की भाषा में प्रार्थना करेंगे उसको ख्याल में नहीं आएगी? तो अवश्य **Turkish** भाषांतर होना चाहिए। उन्होंने भाषांतर करवाया। और एक शुक्रवार ऐसा तय किया कि जिस शुक्रवार को सारे तुर्कीस्तान की सभी मस्जिदों में सरकारी आदेश के अनुसार टर्किश भाषांतर कुरान को पढा जाएगा। और शुक्रवार को पूरे तुर्किस्तान में दंगे हुए। रक्तपात हुआ। वहां कौन-से हिन्दू मुस्लिम लड़ने गये थे? सब मुस्लिम हैं। १००% मुस्लिम देश है। लेकिन वहां भी दंगे हुए। किसमें किसमें हुए? तो नवजागृत राष्ट्रीय लोग (वही से **Young Turk** यह शब्द आया) जो नव जागृत राष्ट्रीय तुर्क थे वे और जो **Religion** के ठेकेदार थे उनके अनुयायी—उनके बीच में सारे तुर्किस्तान में दंगे हुए। यह क्या **Religion** के कारण हुए? अपनी निहित स्वार्थ की रक्षा के लिए इस तरह के दंगे कराए गये। जो प्रक्रिया वहां है वही प्रक्रिया यहां है। **Religion** के कारण कभी दंगा वगैरह हो नहीं सकता।

तो इस तरह से राष्ट्र कल्पना जो है वह **Religion** पर आधारित नहीं है। **Religion** के कारण उसमें भेद नहीं आ सकता। हमारे यहाँ यह कल्पना है कि, राष्ट्र एक; **Religion** हर एक का अलग-अलग रह सकता है। इसके कारण प० पू० श्री गुरु जी ने बार-बार कहा कि भई आप कुरान पढ़ सकते हैं, मस्जिद में जा सकते हैं, बाईबिल पढ़ सकते हैं, गिरजाघर में

जा सकते हैं। लेकिन यह मान लो कि यह राष्ट्र मेरा है। उन्होंने कहा कि, हमारे पूर्वज आपके पूर्वज एक हैं। यह कहने में आपको संकोच क्यों हो रहा है कि रामचन्द्र और कृष्ण हमारे पूर्वज हैं ? जो राष्ट्रीय ग्रंथ है—आप उनको धर्म ग्रंथ माने न माने लेकिन जो राष्ट्रीय ग्रंथ है—वेद है—वेद को न मानने वाले कई हिन्दू है, परन्तु राष्ट्रीय ग्रंथ के नाते मानते हैं। कोई अमेरिका में रहेगा और कहेगा कि मैं अमेरिका National तो हूँ परन्तु जार्ज वाशिंगटन जेफरसन-लिंकन को इसलिए नहीं मानता क्योंकि वो मुसलमान नहीं थे या हिन्दू नहीं थे। उसको वहाँ का राष्ट्रीय रहने का अधिकार नहीं रहेगा। Religion के नाते आप कुछ भी रहें—इस्लाम रहें ईसाई रहें, शैव रहें, वैष्णव रहें, लेकिन अमेरिका में अगर वहाँ के National के रुप में रहना है तो वहाँ के राष्ट्र को मानना पड़ेगा। वह चाहे आपके Religion के हो या न हो। वहाँ के राष्ट्रीय ग्रंथ को मानना पड़ेगा। Declaration of independence है, constitution है उसको मानना पड़ेगा। यह मेरे राष्ट्र ग्रंथ है ऐसा कहना पड़ेगा। जो नहीं कहेगा उसको National होने का अधिकार नहीं। वह नियम यहाँ भी लागू होना चाहिए। Religion के कारण झगड़े होते तो Indonesia में जो दृश्य है वह हम न देख पाते। Religion का और झगड़ों का कोई सम्बन्ध नहीं। इण्डोनेशिया तो हिन्दुस्थान के बाहर है लेकिन उसकी संस्कृति हिन्दू-संस्कृति है। और इसके कारण वहाँ मुस्लिम बहुल देश होते हुए भी हम देखते हैं कि मुसलमान कुरान पढ़ते हैं मस्जिद में जाते हैं परन्तु संस्कृति के नाते रामचंद्रजी की रामलीला भी करते हैं। महाभारत का भी वहाँ प्रचार है। विद्यार्थी सुबह वहाँ नमाज पढ़ते हैं। परीक्षा के लिए जाते हैं गणेश जी को नमस्कार करके आशीर्वाद लेकर। दोनों में कोई अन्तर है उनको नहीं लगता। यहाँ क्यों लगता है ? Rellgion के कारण लगता है ऐसा नहीं। यहाँ जो अन्तर निर्माण हुआ है उसका कारण है निहित स्वार्थ। यहाँ दोनों तरह के निहित स्वार्थ हैं, मुसलमानों को दूर करने वाले। एक तो जो ठेकेदार है उनका भी निहित स्वार्थ है, और राजनैतिक

स्वार्थ तो स्पष्ट है। जैसा मैंने कहा कि परकीय आक्रमकों को चाहे मुसलमान रहे चाहे अंग्रेज रहे अपनी Lobby यहाँ निर्माण करना था, अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए Religion को उन्होंने Exploit किया। वास्तव में Religious ऐसे ये लोग नहीं थे। और अंग्रेजों ने Divide & Rule के लिए ईसाईयत का यहाँ प्रचार किया। यह एक दुःख की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जो Political system देश में आयी वह एक विभाजन कारी System है। केवल Territorial Nalionalism पर आधारित होने के कारण यह विभाजनकारी है Divisive है। और यहाँ जो जितनी विभक्तता की बात करेगा, जितना Separatist बात करेगा उतना उसको वोट ज्यादा मिलेगा। तो वोट पाने के लिए देश का क्या होगा? उसकी फिक्र न करते हुए मुसलमानों का En block वोट मिलना चाहिए इसलिए हमारे राजनैतिक नेता भी मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग रखने की कोशिश कर रहे हैं। आप सर्व साधारण देहात में रहने वाले मुसलमान के पास जाएँगे तो उसके दिमाग में यह कोई चक्कर नहीं। जबतक राजनैतिक नेता वहाँ जाता नहीं और वोट पाने के लिए उसको हिन्दुओं से अलग नहीं करता और उसके दिमाग में भय निर्माण नहीं करता कि मुझे वोट दो नहीं तो बच्चू तुम सुरक्षित नहीं हो, यह जबतक नहीं कहता तब तक सर्वसाधारण देहाती मुसलमान बिलगनेवाला आदमी नहीं। वह भी जानता है कि हम यहीं के हैं। हमारा कुल-खानदान हिन्दुओं का, कुल-खानदान एक है। सबकुछ जानता है। उसको बिगाड़ने वाले पहले मुगल, तुर्क, पठान थे, फिर अंग्रेज आये और अब राजनैतिक नेता आ गये। और ये राजनैतिक नेता तब तक देश का विभाजन करने वाली बात करते रहेंगे जब तक या तो आज की Political System बदली नहीं जाती या आज की System रही तो भी जब तक उनको यह भय पैदा नहीं होता कि इस तरह मुसलमानों का वोट प्राप्त करने के लिए यदि हम भेद पैदा करते हैं और मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग करते हैं, उसके मन में हिंदुओं के बारे में भय पैदा करते हैं तो इसके कारण मुसलमानों का तो वोट मिलेगा, किन्तु इससे ज्यादा हिन्दुओं का वोट खिसक जाएगा; (यह भय जब तक पैदा नहीं होता) तब तक उनकी गन्दी राजनीति का यह

खेल चलता रहेगा। याने मूलतः कोई भेद नहीं किन्तु ये जो मन्थरा का काम करने वाले लोग हैं उनके कारण यह विभेद पैदा हुआ है। ये राजनैतिक नेता मन्थरा का काम कर रहे हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर कीचड़ उछाल रहे हैं।

संघ ने कुछ नहीं किया, ये नहीं किया, वो नहीं किया यह defence देने के लिये मैं खड़ा नहीं। I will not be apologetic. Apologetic किनके साथ? इनके साथ? इनकी क्या कीमत? कौड़ी कीमत के लोग हैं। जो अपना शब्द पालन नहीं कर सकते। जो झूठ बोलते रहते हैं। राजनैतिक स्वार्थ के लिए जैसे घोड़े और बैल चौराहे पर खड़े किये जाते हैं बेचने के लिए वैसे ही जो लोग खरीदे जाने के लिए, बेचे जाने के लिए चौराहे पर खड़े हैं ऐसे Political leaders के सामने हम अपना defence दें? यह इज्तदारी की बात हमारे लिए नहीं। हम इनकी ही कुछ नहीं मानते। defence के लिए नहीं, परन्तु चीज वास्तव में क्या है यह समझाने के लिए, समझने के लिए वह बताने की आवश्यकता है कि आज वास्तव में कोई भेद नहीं। यहाँ के मुसलमान कोई अरबस्तान से आये नहीं, ईसाई रोम से आये नहीं। एक ही ून-खानदान है, एक परिवार है और सर्वसाधारण मुसलमान इस बात को समझ सकता है। राजनैतिक नेताओं ने मन्थरा का काम स्वार्थ के लिए किया। जिसका जबाब दो ही तरीके से हो सकता है या तो Political System बदलना या हिन्दुओं में इतना जागरण पैदा करना कि मन्थरा का काम करने वाले नेताओं से वे कह सके कि महाराज यदि आप मुसलमानों का Block vote पाने के लिए उनको बिगाड़ने का काम करेंगे तो हिन्दुओं का Block vote खिसक जाएगा। ऐसा जबतक नहीं होता तबतक ये दुरुस्त होनेवाले नहीं। मैं आपको बताता हूँ इनको मुसलमानों की क्या फिक्र हैं? क्या इन्होंने मुसलमानों के लिए कभी कोई Constructive काम किया? यदि मुसलमानों को vote का अधिकार नहीं होता तो उन्होंने उनकी फिक्र भी न की होती। उनको गद्दी का फिक्र है, मुसलमानों की फिक्र नहीं। गद्दी की फिक्र है हरिजनों की फिक्र नहीं। और Statement निकालने से क्या मुसलमानों की रक्षा का काम हो सकता है? तो इस बात को हमें समझना

चाहिए और इस दृष्टि से यह जो अप्रचार हो रहा है इसके बारे में विशेष चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं।

हम इस बात को समझ लें कि Religion यह विभाजनकारी नहीं। सभी Religion साथ-साथ रह सकते हैं। राष्ट्रीयता का प्रखर भाव जागृत होना चाहिए। ऐसा यदि हुआ तो कुछ लोगों के मन में जो संदेह है कि यदि राष्ट्रीयता का प्रखर भाव जागृत हुआ तो हम उन सब लोगों को आत्मसात कर सकते हैं वह संदेह समाप्त हो जायगा। भई आत्मसात करने की क्या बात है? वे अपने ही हैं। इतना है कि उनको जबरदस्ती से अपने विरोध में खड़ा किया गया है। उनको आत्मसात करने की अपने संस्कृति में क्षमता है। हमारी संस्कृति इतनी विशाल है कि सबको आत्मसात करने की क्षमता है हमारी। इतिहास में इसके प्रमाण मिलते हैं। जैसे कहा कि आक्रमण हुए। विशुद्ध इस्लाम का प्रचार करने के लिए बड़े धार्मिक मुसलमान हाथ में तलवार लेकर आये ऐसा नहीं था। ये अपने अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए इस्लाम का प्रयोग करते थे। इसके कारण जो आक्रमण हुए वे मुगल आक्रमण, तुर्की आक्रमण, पठाण आक्रमण, अरब आक्रमण ऐसा था। इस्लाम का केवल उपयोग किया गया, Exploitation किया गया। इसी के कारण हम देखते हैं कि केवल हिन्दू Verses मुसलमान संघर्ष नहीं हुए मुसलमान Verses मुसलमान भी संघर्ष हैं। बाबर जब हिन्दुस्थान में आया तो लड़ाई किसके साथ हुई? इब्राहिम लोदी के साथ हुई। इब्राहिम लोदी क्या R.S.S. का था? तो यह लड़ाई किस लिए होती है? औरंगजेब जब दक्षिण में गया तो उसकी लड़ाई केवल शिवाजी के साथ नहीं थी तो बहमनी बादशाहियाँ जो पांच थी उनके साथ भी उसने लड़ाई की थी। वह क्या हिन्दुत्व के लिए की थी? केवल राजनैतिक स्वार्थ। किन्तु यह होते हुए भी—और हम हिन्दुस्थान के विस्तृत भू-भाग में, विजेताओं के अधीन होने के बावजूद हिन्दू संस्कृति इतनी आत्मसात करने वाली है कि मुसलमानों को भी आत्मसात करने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। आज भी आप देखेंगे ये राजनैतिक लोग कुछ भी कहे लेकिन आप यदि अध्ययन करेंगे तो अरब-

स्थान का इस्लाम और हिन्दुस्थान का इस्लाम इसमें बड़ा अन्तर है। प्रक्रिया शुरू हुई—हमारे यहाँ आकर बसने के बाद—बाहर के पराये आक्रमक मुसलमानों के भी मन में उत्सुकता तो जागृत हुई कि भई ये हिन्दू हैं क्या ? समझ लेना चाहिए। तो हमारे धर्म ग्रंथों का भाषांतर शुरू हुआ। रामायण महाभारत, अथर्ववेद, प्रबोध चंद्रोदय, योग वाशिष्ठय इनका भाषांतर हुआ परशियन में। उनका अध्ययन शुरू हुआ। जो Intlectuals थे और जो Aristocrats थे, उन्होंने अध्ययन शुरू किया। और यह श्रेष्ठ ज्ञान होने के कारण उसका प्रभाव उनके मन पर होने लगा और इसके कारण आपको पता होगा कि औरंगजेब को—जो इतना कट्टर कहा जाता है—तो इसलिए कि उसने सांस्कृतिक ऐक्थ के रास्ते में रुकावट डाली। विचार पनप रहा था कि अल्लाह तो अल्लाह है, चाहे तो काबा में हो, सोमनाथ के मंदिर में हों, चर्ज में भी हो; हर जगह हो ऐसा कहा। तो यह पाकिस्तानी मनोवृत्ति के नजदीक है या शंकराद्वैत के नजदीक है यह हर एक के सोचने की बात है। प्रभाव हो रहा था। इसलिए औरंगजेब सत्ता की लालसा से सोचने लगे कि इस तरीके से यदि हिन्दू संस्कृति का प्रभाव बढ़ते जाएगा तो हमारी Political motive का क्या होगा ? इसलिए उसको fanatic होना पड़ा। कार्ल मार्क्स ने इस प्रक्रिया का वर्णन बड़े स्पष्ट शब्दों में किया है। उसने उदाहरण दिया है कि विजेता राष्ट्र के लोग सांस्कृतिक दृष्टि से हीन होवे तथा विजित राष्ट्र के लोग सांस्कृतिक दृष्टि से यदि श्रेष्ठ होवे तो जो राजनैतिक-शारीरिक दृष्टि से विजेता हैं उसके ऊपर—जो राजनैतिक-शारीरिक दृष्टि से जित राष्ट्र हैं उसकी संस्कृति का प्रभाव हो जाता है। और सांस्कृतिक दृष्टि से जित राष्ट्र विजेता पर विजय प्राप्त करता है। उन्होंने उदाहरण दिया कि रोमन साम्राज्य था, वह विजेता था। जेरूशलम के ईसाई लोग थे वे जित लोग थे। लेकिन चूँकि जित लोगों की संस्कृति श्रेष्ठ थी जित लोगों ने सांस्कृतिक दृष्टि से विजेताओं पर विजय प्राप्त कर ली। और रोमन लोगों को ईसाई संस्कृति स्वीकार करनी पड़ी। यह उदाहरण देते हुए कार्ल मार्क्स कहते हैं—और मैं कार्ल मार्क्स को Verbattan quote कर रहा हूँ। भारतीय संदर्भ में—वह कहते हैं—

"The Arabs, the Turks, the Pathans, the Moghuls were being Hinduised."

कार्ल मार्क्स का यह कहना है कि हिन्दूकरण उनका शुरू हुआ। यह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जारी थी। राजनैतिक नेताओं ने उसको रोका। वरना यह प्रक्रिया जारी थी। और वह केवल तबतक जारी थी ऐसा नहीं है। अँग्रेजों के समय में भी यह प्रक्रिया बढ़ती गई और राजनैतिक परिभाषा में लोग इसका ज्ञान भले ही न रखें, किन्तु वास्तविकता यह थी कि हिंदूकरण बढ़ रहा था। और इसी कारण आपको आश्चर्य होगा कि जिस समय पाकिस्तान की माँग उठाई गयी—"हिन्दूस्थान हमारा है।" कहने वाले मो० इकबाल ने जब पाकिस्तान का समर्थन किया, तो मुसलमानों को भड़काने के लिए उन्होंने साहित्य लिखा। अब यह भड़काने वाला है, **exaggerated** है, अतिशयोक्तिपूर्ण है। यह तो बात ठीक है—लेकिन उसमें कुछ सत्य का अंश होगा—जो सत्य होगा उसी को **exaggerate** किया जा सकता है। शून्य को exaggerate नहीं किया जा सकता। तो उन्होंने भड़काने के लिए जो लिखा है वह भी आपको यह परिचय देगा कि वास्तव में हिंदूकरण चल रहा था। एक कविता है बड़ी प्रसिद्ध है। पाकिस्तानियों में चलती थी—मूलतः उर्दू में है—अँग्रेजी में खुद इकबाल साहब ने उसका भाषान्तर किया है—नमूने के लिए दो एक चीजें आपके सामने रखता हूँ कि किस तरह से उनके भी मन में भय था यह आपको दिखाई देगा। वह कहते हैं—

From the British you have learnt your language
Your culture from the Hindus
How can Muslims Pass as a Nation
Who shame even the Jews.
Into the sky of your Nation you rose
Like a bright star with a hue
But the lure of India's idols has made
Even Brahmins out of you

*या*ने उनको यह कहना पड़ा कि यहाँ आने के बाद तुम ब्राह्मण होते जा रहे हो, क्या बात है। जो प्रक्रिया चल रही थी उसका परिचय इससे हमें मिल सकता है। ईसाईयों की भी यही बात है। आज भी ईसाई कार्डिनल जो है अर्नाकुलम के उन्होंने स्पष्ट घोषित किया है हमारी संस्कृति हिन्दू है। यह प्रक्रिया पहले से जारी है और इसका ज्ञान ईसाई नेताओं को था, जो Religion के नेता थे। John Stanlay इस नाम के एक सुपरवाईजर एक मिशन चर्च के, हिन्दुस्थान में, लखनऊ में रहे। उन्होंने Review of Christ करके एक किताब लिखी है। उसकी प्रस्तावना में वह कहते हैं कि मैं यहाँ आया और मैंने सोचा कि भई जरा study करना चाहिए कि यह क्या है हिन्दू नाम की चीज। तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि हिन्दू में सब दिखे—एक तरफ ऐसे अनपढ़ अनाड़ी दिखते हैं जो भूत-प्रेत-पिशाच, वृक्ष-पाषाण की पूजा करते हैं। तो एक तरफ ऐसे विद्वान दिखते हैं जो आत्मा-परमात्मा, ब्रह्म सत्य जगतमिथ्या की चर्चा करते हैं। तो यह है क्या ? सभी हिन्दू हैं। यह मेरे ख्याल में नहीं आया। लेकिन थोड़ी गहराई में जाकर जब मैंने अध्ययन किया तो मुझे पता चला कि यह बहुत खतरनाक बात है। उन्होंने अपने दृष्टिकोण से लिखा। उन्होंने कहा कि हिन्दू नाम की जो चीज है बड़ी खतरनाक है। अपने बिशप लोगों को चेतावनी दी कि Beware of this octopus of Hinduism सावधान रहो हिन्दूइज्म के आक्टोपस से। आक्टोपस यह अष्टपाद जलचर प्राणी है, दक्षिण महासागर में मिलता है। इस प्राणी की यह विशेषता है कि मूँह से कुछ खाता नहीं है। उसका जो पोषण होता है वह ऐसा होता है कि अष्टपाद प्राणी महासागर में संचार करते रहता है। और देखता है कि कोई छोटा प्राणी ऐसा है क्या जिसको खाया जा सकता है। ऐसा प्राणी दिखा तो उसके सर पर यह बैठ जाता है। इसका पेट बड़ा मुलायम होता है इसके कारण जिस प्राणी पर यह बैठेगा वह इस पर चिपक जाता है। जैसे वह प्राणी इस पर चिपक जाता है यह अपने आठों पाँव समेट लेता है। और पाँव जब खुलते हैं तो वह प्राणी नहीं दिखाई देता है, क्योंकि मुलायम पेट के माध्यम से उसने उसको निगल लिया होता है। यह जो अष्टपाद

प्राणी है उसकी उपमा देते हुए उन्होंने कहा Beware of this Octopus of Hinduism. हिन्दूइज्म यह एक आक्टोपस है इससे सावधान रहो। उन्होंने यह भी कहा कि यह हिन्दूइज्म एक दिन जीसस को भी आत्मसात कर ले सकता है। आत्मसात करने की दृष्टि से उनका कहना गलत नहीं है। क्योंकि जीसस को तो हमने आत्मसात कर लिया। कोई चीज जिसस ने ऐसी नहीं कही जो हमारे द्रष्टाओं ने नहीं कही। इतना आत्मसात कर लिया है कि गाँधी जी को कुछ लोग क्रिश्चियन कहते थे। और गाँधी जी अपने को सनातनी हिन्दू कहते थे।

हमारा दृष्टिकोण सर्व समावेश :—सब का सब assimilate करने का है—Synthesis का है

एक ईसाई मिशनरी, इसके पूर्व जो श्रृंगेरी के शंकराचार्य थे श्री चन्द्रशेखर भारती, उनके पास गये और उनको कहा कि मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करना चाहता हूँ। बोले काहे के लिए। बोले कि आपका हिन्दू धर्म अच्छा है कि हमारा क्रिश्चियन धर्म अच्छा है? भारती जी बोले कि दोनों एक ही है, शास्त्रार्थ की आवश्यकता ही क्या है? मतभेद होता है तब शास्त्रार्थ होता है। आपका हमारा कोई मतभेद नहीं है। मिशनरी ने कहा कि नहीं मतभेद जरूर है, हम आपसे भिन्न हैं। तो उन्होंने कहा कि अच्छा भाई पूछो। तो उन्होंने पूछा कि हिन्दू Cosmology क्या है? उन्होंने कहा जो आपकी है। Cesmology याने विश्व का निर्माण कैसे हुआ वगैरह। तो बोले कि हमारी Cosmology हमें बताती है—बाइबल में कहा गया है कि "God said let there be light and there was light" भगवान ने कहा प्रकाश हो और प्रकाश हो गया।

शंकराचार्य ने कहा कि हमारे यहाँ भी यही कहा गया है। फर्क इतना ही है कि एक सत्य होते हुए भी—सत्य जिनको बताना था उनका स्तर अलग-अलग था —इसके कारण जो सुननेवाले लोग हैं उनकी समझदारी का स्तर ध्यान में रखते हुए—सत्य एक होते हुए भी—इसका विवरण अलग-अलग भाषा में करना पड़ा। यहाँ गाय का महत्त्व बहुत है। वहाँ ऊँट का महत्त्व बहुत है। जेरूशलम में Sheep का महत्त्व बहुत है। यहाँ गोपाल हुआ

वहाँ शेफर्ड हुआ। बात एक ही है। Cosmology एक ही है। लेकिन यह था कि जीसस ने जब कहा जेरूशलम के लोगों को "God said let there be light and there was light तो लोगों का स्तर ऐसा था कि उन्होंने सुन लिया और मान लिया। अब हमारे देश में स्तर कुछ ऊँचा था। यहाँ विद्वान लोग थे। वह प्रश्न पूछते हैं कि Why God said let there be light ? तो उसका उत्तर देना चाहिए। हमारे यहाँ उसका उत्तर भी दिया गया है। स अकामयत् एकोऽहं बहुष्यामिति। वह एक ही था। उसके मन में इछा हुई कि मैं एक हूँ अनेक होना चाहिए let me multiply myself एक ऐसी कामना उसके मन में निर्माण हुई। इसलिए उसने अपने को multiply किया। अपने को अनेक करने की प्रक्रिया में पहले कहा Let there be light इसलिए light हो गया। तो Cosmology में अंतर नहीं है—लेकिन audiences का level अलग-अलग था इसलिए अलग-अलग भाषा का प्रयोग करना पड़ा। विवेकानन्द ने कहा कि सत्य एक है भाषा केवल अलग-अलग है। हमारे यहाँ कहा गया है द्वैतवाद। अब यह द्वैतवाद येरूशलम के लोग थोडे ही समझ सकते हैं। अपने आध्यात्मिक प्रवास में जीसस ने कहा कि Glory be to thy name me Lord ! बात एक ही है। यहाँ उसको द्वैतवाद कहते हैं। हमारे यहाँ विशिष्टाद्वैत कहते हैं। आध्यात्मिक प्रवास के दूसरे चरण में उन्होंने कहा कि I am in my Father—I in you and you in me. बात एक ही है। यही विशिष्टा द्वैत है। अन्तिम चरण पर जब ईसा पहुँचे तो उन्होंने कहा कि I and my Father are one. I am the way to truth and light. यह तो भाषांतर है केवल इसका 'अहम ब्रह्मास्मि-तत्त्वमसि सर्वं खल्विदं ब्रह्म।" उनकी समझदारी छोटी थी—स्तर छोटा था इसी से उनको कहा कि I and my Father are one. तो एक ही सत्य है केवल उसका विशदी-करण अलग-अलग भाषा में करना पड़ा। चंद्रशेखर भारती—शंकराचार्य ने जब यह कहा तो यह मिशनरी निरूत्तर होकर चले गये।

यहाँ दृष्टिकोण सर्व समावेश होने के कारण यह चिन्ता करने की कतई आवश्यकता नहीं है कि मुसलमानों को कैसे आत्मसात किया जाएगा,

ईसाईयों को कैसे आत्मसात किया जाएगा। हम सब को आत्मसात कर सकते हैं। क्योंकि हिन्दू यह एक Religion का नाम नहीं, हिन्दू एक जीवन पद्धति है। हिन्दू यह एक दर्शन है। हिन्दू यह एक संस्कृति है। और यह संस्कृति विकास की दिशा में ले जानेवाली संस्कृति है। हमारी संस्कृति हमारी जीवन पद्धति हमें कहती है कि हर एक का आत्मिक विकास होना चाहिए। और यह विश्वास का रास्ता क्या है? तो कहा गया कि बच्चा जब पैदा होता है तो वह केवल खुद के साथ ही एकात्म होता है। उसकी माँ कौन है? बाप कौन है? इसका भी पता नहीं रहता है, इसलिए उसकी एकात्मता Identification खुद के साथ हुआ करती है। लेकिन उसकी जागृति का विकास होता है—धीरे-धीरे वह पहचानने लगता है कि यह मेरी माँ है, बाप है, भाई है, बहिन है, यह मेरा परिवार है। वह परिवार के साथ एकात्मता महसूस करता है Identify होता है। जब और बड़ा होता है तो जाग्रति का और विकास होता हैं। वह सम्पूर्ण समाज के साथ एकात्मता का Identification का अनुभव करता है। लेकिन यहीं तक एकता नहीं है। हमारी संस्कृति हमें बताती है कि इसके भी ऊपर जाना है। संपूर्ण मानवजाति के साथ मनुष्य की एकात्मता हो Identification हो—वसुधैव कुटुम्बकम्—संपूर्ण जो वसूधा है वह मेरा कुटुम्ब है इस भावना का जागरण। और फिर उसके भी बाद जब वह सन्यास आश्रम होता है—हमारे यहाँ सन्यास आश्रम बताया गया है और कहीं नहीं, तो उस समय उसके लिए कहा गया कि उसके लिए कुछ नहीं है अब। संपूर्ण अस्तित्व उसका बस एक अंश मात्र है। उसका नाम भी छट जाता है। उसके परिवार का नाम भी छूट जाता है। उसके जाति का नाम छूट जाता है। उसके राष्ट्र का नाम छूट जाता है। वह संपूर्ण मानवजाति का एक सदस्य बन जाता है। उस संपूर्ण अस्तित्व का अंश बन जाता है। तो World Citizen बनता है, ऐसी बात नहीं, तो वह Citizen of Universes हो जाता है। यह जो अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड है उसका एक नागरिक बन जाता है, उसका एक अंश बन जाता हैं। वह आत्मानुभूति के आधार पर कह सकता है कि—

अहं ब्रह्मास्मि—सर्वं खल्विदं ब्रह्म

संपूर्ण अस्तित्व के साथ वह एकात्म होता है उसको, बांधनेवाली कोई मर्यादायें नहीं—न व्यक्ति की मर्यादा है, न कुल की मर्यादा है, न जाति की मर्यादा है, न राष्ट्र की मर्यादा है। वह संपूर्ण अस्तित्व का एक हिस्सा हो जाता है, भगवान के साथ एकात्म हो जाता है, ब्रह्मस्वरूप हो जाता है उसको सन्यासी ऐसा हमारे यहाँ कहा है, वह World Citizen नहीं, Citizen of the Universes है।

आजकल यह बहुत झगड़ा चला है। कुछ राजनैतिक नेता वोटों के लालच में सुझाव दे रहे हैं कि हिन्दू शब्द छोड़ दो। भारतीय शब्द ले लो। हमने कहा कि भारतीय—हिन्दू बोले कि नहीं दोनों एक ही है। समानार्थक है। हमने कहा कि हम तो मान सकते हैं कि दोनों समानार्थक हैं; अगर आप कहते हैं और अगर आप ईमानदारी से कह रहे हैं कि हिन्दू और भारतीय दोनों समानार्थक हैं तो फिर हिन्दू शब्द काहे को छोड़ दिया जाए, इसी को रखा जाय। है तो समानार्थक फिर छोड़ना काहे को? लेकिन बोले कि नहीं, छोड़ना ही अच्छा। हमने कहा कि क्यों अच्छा? दोनों समानार्थक हैं फर्क क्या पड़ेगा? तो सीधी बात यह है कि आप ईमानदारी से यह बात नहीं कह रहें हैं कि 'हिन्दू' और 'भारतीय' समानार्थक है। आपके मन में हिन्दू का Phonotation अलग है भारतीय का Phonotation अलग है। और आपके कहने के पीछे मन्तव्य यह है कि हिन्दू शब्द छोड़ने के कारण अहिन्दुओं का वोट प्राप्त करने में सहायता होगी। केवल Election Politics ध्यान में रखकर आप सत्य सिद्धांत बेचने को तय्यार हो। हमने कहा कि रा० स्व० संघ सत्य सिद्धांत को बेचेगा नहीं; क्योंकि हम मतों के याचक नहीं। Beggers can not be choosers जो याचक है वह अपना Choice नहीं कर सकते, यह हम समझते हैं। But we are nor beggers of the Votes. हम तो अपना सत्य सिद्धांत प्रतिपादित करते रहेंगे, बार-बार प्रतिपादित करते रहेंगे। और कोई भी सत्य है या असत्य है इसकी कसौटी Majority-Minority नहीं हो सकती। सिद्धांत की शक्ति उसकी सत्यता पर निर्भर है। Majority-Minority पर नहीं हो सकती। आप उदाहरण के लिए देखिए। एक समय था कि योरोप के सारे लोग यह मानते थे कि पृथ्वी यह सारे विश्व का केन्द्र है और सूर्य

पृथ्वी के पीछे चक्कर काटता है। उस समय एक Scientist हुआ। उसने कहा कि नहीं। उन्होंने अन्वेषण पूर्वक यह सिद्ध किया कि पृथ्वी विश्व का केन्द्र नहीं तो सूर्य विश्व का केन्द्र है और पृथ्वी सूर्य के पीछे चक्कर काटती है। सारे योरोप के लोग बौखला उठे। उन्होंने कहा कि यह पाखण्डी है। छोटी बात बोल रहा है। इसको मारना चाहिए। किसी ने कहा कि सूली पर चढ़ाना चाहिए। अब उस समय मतदान होता और कहते कि साहब यह शास्त्रज्ञ जो कहता है, उसके पक्ष में कितने हैं और शास्त्रज्ञ के विरोध में कितने हैं, तो योरोप के सारे लोग उसके विरोध में वोट देते and he would have been in the microscopic minority of cne वह एक की Minority में आ जाता, किन्तु इसके कारण क्या Majority की जीत हो गयी ? आज दुनिया किस सिद्धांत को मान रही हे ? उस समय योरोप की Majority जिस सिद्धांत के साथ थी उस सिद्धांत को नहीं मान रही। उस समय जो Microscopic minority of one में था। उसके सिद्धांत को दूनिया मान रही है—क्यों ? Majority के आधार पर कोई सत्य सिद्ध नहीं हुआ करता—सत्य की अपनी निजी शक्ति हुआ करती है। तो हम जो कह रहे हैं यदि वह सत्य है तो उसकी निजी शक्ति है वह Majority-Minority के आधार पर तय नहीं हो सकता। और इसके कारण Election को ध्यान में रखते हुए जैसे चुनाव समझौते हुआ करते हैं वैसी यहाँ सत्य सिद्धांत में लेन-देन नहीं हो सकती। सत्य सिद्धांत के बारे में समझौता नहीं हो सकता। तो हमने कहा कि हिन्दू-भारतीय एक है तो हिन्दू ही क्यों नहीं लेते ? तो उन्होंने कहा कि नहीं जरा लोग नहीं जानते। हमने कहा कि लोग तो संघ को ही कहाँ चाहते हैं ? १९२५ से मैं देख रहा हूँ कि हमेशा संघ के ऊपर टीका करने वाले लोग रहे। लोगों को खुश करने का हम धंधा उठाएँगे तो संघ को ही बंद करना यही एक मात्र रास्ता रहेगा। तो लोगों को खुश करना यह हमारा धंधा नहीं है। लोगों को Educate करना, लोगों को संस्कार देना, लोगों को सही रास्ते पर लाना—जैसे छोटे बच्चे को होता है—वह समझता नहीं, उसकी हर एक बात आप मानते जाइये, उसके कहने के समान करते जाएँगे

—कहाँ तक करेंगे। कभी-कभी उसका अनुनय करना पड़ेगा, कभी उसको चपत भी लगानी पड़ेगी। लेकिन उसको सत्य रास्ते तर तो लाना ही पड़ेगा। तो हम अनुनय करने वालों में से नही हैं, apeasement करने वालों में से नहीं हैं। कितना मुसलमानों के बारे में हमने कहा' उसका अर्थ यह नहीं है कि हम मुसलमानों का अनुनय करना चाहते हैं। क्योंकि हम वोट के भिखारी नहीं हैं तो हमे apeasement करने की आवश्यकता क्या? हम अपने सिद्धांत, सत्य सिद्धांत का प्रचार करेंगे—हमे विश्वास है कि आज नहीं तो कल यह मन्थरा जो है राजनैतिक leaders, यह दूर हो जाएँगे, ये निष्प्रभ हो जाएँगे। इनकी credibility समाप्त हो जाएगी, तो यहाँ का मुसलमान समझेगा कि हिन्दू यह शब्द Religion का वाचक नहीं, राष्ट्र का वाचक है; वह भी समझेगा। केवल इन मंथराओं को कान पकड़ कर दूर करने की आवश्यकता है और वह भी करेंगे। तो इतना आत्मविश्वास होने के कारण हम समझौता काहे को करें। समझौते की कोई आवश्यकता नहीं। हम अहिन्दुओं का अनुनय भीं करने वाले नहीं। उनको सीधे बताने वाले हैं कि, इस राष्ट्र के आप अंग हैं, इस नाते आप समझेंगे, इसमें आपका कल्याण है। हम उन Political नेताओं के समान नहीं जो ५० प्रतिशत marriage में विश्वास रखते हैं।

मैं कॉलेज में था तो एक Picture देखी थी। उसमें ऐसा था कि एक लड़का दिखने से भी अच्छा नहीं, बुद्धिमान भी नहीं, लेकिन Romantic था। इसलिए इधर से उधर प्रेम वगैरह करता था। लोग उसकी खिल्ली उड़ाते थे। एक दिन वह Hostel में आया और चार लड़कों के सामने घोषित किया 'मेरा Marriage तय हुआ है।' सब बोले—अच्छा तुम्हारी शादी तय हो गयी—कैसे? तुम्हारे साथ कौन-सी लड़की शादी करेगी? पहले इसके कि वह तुम्हारे साथ शादी करे, वह गले में पत्थर वगैरह बाँधकर आत्म-हत्या नहीं कर लेगी? तो बोले कि, यह शादी तय हुई है याने ५० प्रतिशत तय हुई है। पूछा गया कि ५० प्रतिशत माने क्या? तो बोले कि शादी में दो पार्टियाँ होती हैं न? एक लड़का और एक लड़की। उसमें से मैं एक पार्टी हूँ। मैंने तय कर लिया है कि मैं उसके साथ शादी करूँगा। तो ५०

प्रतिशत तो मामला तय हो गया है अब केवल ५० प्रतिशत ही बाकी है। इसी तरह से हिन्दू-मुसलमान एकता की जो बात करते हैं; वे कहते हैं कि ५० प्रतिशत एकता तो हो गयी है। अब ५० प्रतिशत ही बाकी बची है। यह ५० प्रतिशत Love affair में विश्वास रखने वाले हम Romantic लोग नहीं हैं। हम Realistic हैं, वास्तविकतावादी हैं, इस कारण हमें विश्वास है कि हम उन्हें समझायेंगे—अनुनय नहीं करेंगे, तोषण नीति स्वीकार नहीं करेंगे appeasement नहीं करेंगे—सत्य का प्रतिपादन केवल करेंगे और हमें विश्बास है कि वे सत्य समझ सकते हैं, आज नहीं समझेंगे—कल समझेंगे। सत्य वे समझ सकते हैं !

लेकिन मैंने कहा कि आप ये जो हिन्दू और भारतीय कह रहे हैं कि आप उपर-उपर से ही कह रहे हैं। कहते हैं कि हिन्दू याने भारतीय—भारतीय याने हिन्दू तो भी हिन्दू शब्द Drop करने का जो आपका कारण है—वह—हिन्दू शब्द, उसका Phonotation दूसरा कुछ होता है, भारतीय से भिन्न होता है ऐसा आपको लगता है। कहा, हाँ ! हाँ थोड़ा ऐसा ही है। हमने कहा, नहीं, बहुत ऐसा है। तो ये Phonolation अगर भिन्न है, तो इसकी चर्चा होनी चाहिए कि यह भिन्नता कहाँ है ? हमारे भी मन में भिन्नता आपके कारण आ रही है। हिन्दू और भारतीय एक है हमें कहने में कोई आपत्ति नहीं। ऐसा यदि होगा तो हिन्दू शब्द Drop काहे को करना। लेकिन Drop करने वालों के मन में Phonotation क्या आता है ? भारतीय से भिन्न Phonotation आता है उनके मन में Phonotation यह आता है कि भारतीय कहने से प्रादेशिक राष्ट्रवाद, यह आ जाता है। तो उसमें सब लोग आ जाएंगे यानि सभी वोटर्स। उनके सिद्धांत से संबंध नहीं, वोटों से संबंध है। तो सभी वोटर 'भारतीय में आ जाएँगे हमसे खुश रहेंगे। और हमने हिन्दू कहा तो रूढ़ार्थ में जो हिन्दू हैं वो तो वोट देंगे; किन्तु राष्ट्रीयता और Religion और इसका सारा समझाना—तबतक तो Election भी निकल जाएगा। हम कहाँ तक समझाएँगे। Time कहाँ है ? और इसके लिए काहे को समझाने की सारी झंझट करना, सत्य प्रतिपादन की काहे को झंझट

करना, चुनाव जल्द आ रहा है Compromise कर लो तो हमने कहा कि आपके मन से Hindu का Phonotation है Something narrower than Bhartiya अब हमने कहा कि इसके कारण हमारे मन में दूसरा Phonotation है। तो आप भारतीय को हिन्दू नहीं मानते। क्योंकि भारतीय को प्रादेशिक राष्ट्र मान रहे हैं। मैं हिन्दू हूँ इसके कारण Territorial Nationalism तक सीमित नहीं रह सकता। वास्तव में भारतीय शब्द हिन्दू में समव्याप्त होने में हमारी ओर से कोई आपत्ति नहीं लेकिन आप उसको Territorial Nationalism तक सीमित रखना चाहते हैं। आपका Phonotation है Territorial Nationalism याने इस भारतवर्ष का जो प्रादेशिक राष्ट्रीयत्व है वही आप मान रहे हैं। और मैं यदि सच्चा हिन्दू हूँ— और मैं यदि कल सन्यासी बन जाता हूँ, और सन्यासी के लिए कहा गया कि "स्वदेशो भुवनत्रय" वह किसी एक राष्ट्र का नहीं सारा भुवनत्रय उसका हो जाता है। वह World citizen बनता है, सारी दुनिया का नागरिक बन जाता है, तो आपके भारतीयत्व में मैं आता हूँ तो मैं World Citizen कैसे बनूँगा? प्रादेशिक राष्ट्रीयत्व के ऊपर उठकर सन्यासी बन संपूर्ण चराचर अस्तित्व के साथ मैं एकात्म होना चाहता हूँ। आपके राष्ट्रवाद की चौखट में मैं रहा तो चराचर के साथ मैं कैसे एकात्म हो सकता हूँ। मुझे तो आपकी यह चौखट में ही रहना पड़ेगा।

हिन्दू विभिन्न स्तर पर विभिन्न बातों के साथ Identified है। एक स्तर पर व्यक्ति के साथ Identified है, एक स्तर पर परिवार के साथ identified, एक स्तर पर राष्ट्र के साथ identified है--एक स्तर पर मानवता के साथ identified, एक स्तर पर चराचर विश्व के साथ identified। यह मनुष्य के जागृति के विकास का क्रम याने हिन्दुत्व है। जो आप हमारे विकास का क्रम रोक देंगे, हमको कहेंगे कि सन्यास मत लेना। मानव जाति का एक सदस्य मत बनना। चराचर अस्तित्व के साथ एकात्म मत बनना। क्योंकि मेरा वोट निकल जायगा। यह कैसे हो सकता है? तो प्रादेशिक राष्ट्रवाद के चौखट में हिन्दू बैठ नहीं सकता। हाँ, यह बात ठीक है कि जो जाग्रति के

विकास का क्रम है वह exclusive नहीं Inclusive है। Exclusive का मतलब होता है कि यदि मैं परिवार के साथ एकात्म हूँ तो मेरा अपने से प्रेम नहीं। मैं समाज के साथ प्रेम करता हूँ तो परिवार से घृणा करता हूँ। ऐसा नहीं। Inclusive है माने जब मेरी जाग्रति का विकास परिवार तक होता है तो मैं परिवार से प्रेम करता हूँ अपने से भी करता हूँ। समाज से प्रेम करता हूँ परिवार से भी प्रेम करता हूँ। मानव जाति से प्रेम करता हूँ राष्ट्र से भी प्रेम करता हूँ। चराचर विश्व के साथ एकात्म हूँ राष्ट्र के साथ भी एकात्म हूँ। Inclusive है Exclusive नहीं है। यह तो ऐसे विकास का क्रम है जैसे बीज, अंकुर, पौधा शाखा उसके जो पत्ते होते हैं वे—फूल और फल होते हैं। विकास का क्रम एक दूसरे के खिलाफ नहीं है। अब यह विकास का क्रम आपके Territorial Nationalism के कारण आपको रोकने का क्या अधिकार है? तो हिन्दू और भारतीय यदि एक हैं तो हिन्दू ही रखा जाए। और यदि Phonotation में अन्तर है तों वह नहीं है जो आप समझते हैं, याने हिन्दू संकीर्ण है भारतीय विस्तृत है यह मानना ठीक नहीं। Phonotation यह है कि हिन्दू अति विस्तृत है सबका समावेश कर लेनेवाला है। भारतीय में सबका समावेश नहीं है। और इसके कारण हम भारतीय शब्द लेकर हिन्दू शब्द को कैसे छोड़ सकते हैं?

तो राष्ट्रकल्पना जो है इस राष्ट्रकल्पना को हिन्दू शब्द जो है इसको ठीक से समझना चाहिए। हिन्दू राष्ट्र का मतलब यह होता है कि जो हिन्दू जीवन पद्धति को—हिन्दू संस्कृति को स्वीकार किये हुए लोग हैं, उनका है। Religion जो कुछ भी रहे—उपासना पद्धति जो कुछ भी रहे, हिन्दू जीवन पद्धति—हिन्दू संस्कृति जिन्होंने स्वीकार की है वे इस विकास क्रम में विश्वास रखते हैं। व्यक्ति से ब्रह्मांड तक विकास क्रम है जाग्रति का, इसमें विश्वास रखते हैं। इसमें विश्वास रखनेवाले हैं हम। हो सकता है कि मेरी आज यह क्षमता न हो। मैं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के साथ एक नहीं हो सकता जैसे शंकराचार्य हो सकते थे; किन्तु मेरी मान्यता है, मेरा Ideological faith है कि सम्पूर्ण चराचर एक है। इस मान्यता के साथ Territorial Nationalism मेल नहीं खा

सकता। यह जाग्रति का विकासक्रम जिन्होंने मान लिया है ऐसे लोगों का राष्ट्र याने यह हिन्दू राष्ट्र। इसका पूरा विचार हम करें। हिन्दू शब्द को समझ लें। राष्ट्र शब्द को समझ लें। और इस बात को समझने की कोई आवश्यकता नहीं कि बड़े अखबारों में टीका हो रही है इसके कारण हमारा नुकसान होगा—बिलकुल नहीं। ये सारे अखबार रेडियो और टेलीविजन ५% लोगों तक भी नहीं पहुँचते। और जो टीका करनेवाले लोग हैं उनकी विश्वसनीयता भी पहले ही समाप्त हो चुकी है। उल्टा अनुभव हमें आ रहा है। जो लोग पहले संघ के बारे में सोचते नहीं थे वे लोग हमारे पास आकर पूछने लगे हैं कि यह संघ क्या है जरा बताओ। लोगों की जिज्ञासा जाग्रत हुई। लोगों से पास जाने का हमें बहाना मिलता है। संघ का प्रचार हो रहा है। यह तो अच्छा हो रहा है। यह हमारे Propoganda Officer का काम कर रहे हैं। इतना विस्तृत प्रचार तो हम भी नहीं कर सकते थे।

तो इसके कारण विचलित न होते हुए अपने सिद्धांत को हम समझ लें और अपनी कार्य पद्धति पर एकाग्रचित्त करते हुए हम अमल करें इतना ही कहना इस समय पर्याप्त होगा।

:o:

प्रकाशक :

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

बिहार प्रदेश

मुद्रक :

लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस

नयाटोला, पटना ८०० ००४

सहयोग राशि–पचचास पैसे